SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बाल्यावस्था के बालक–बालिकाओं पर अभिरुचि के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन (उत्तर प्रदेश के जनपद सुल्तानपुर एवं अम्बेडकर नगर के विशेष संदर्भ में)

सुधा दूबे, शोधार्थी, गृहविज्ञान विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
अपर्णा शर्मा, (Ph.D.) गृहविज्ञान विभाग,
विजयाराजे शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

सुधा दूबे, शोधार्थी, गृहविज्ञान विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
अपर्णा शर्मा, (Ph.D.) गृहविज्ञान विभाग,
विजयाराजे शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 26/02/2022
Revised on : -----
Accepted on : 05/03/2022
Plagiarism : 03% on 26/02/2022

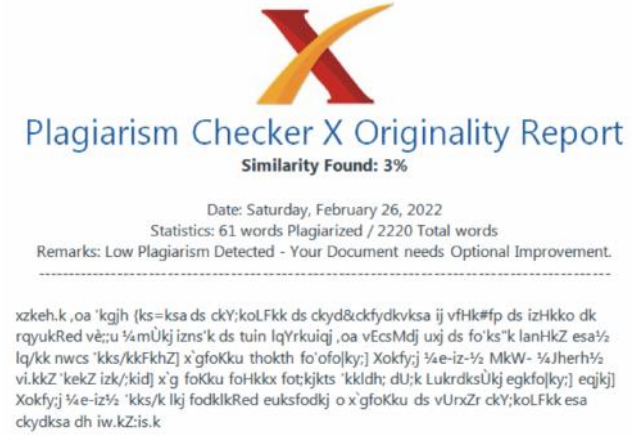
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 3%

Date: Saturday, February 26, 2022
Statistics: 61 words Plagiarized / 2220 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

xzkeh.k ,oa 'kgjh {ks=ksa ds ckY;koLFkk ds ckyd&ckfydkvksa ij vfHk#fp ds izHkko dk rqyukRed vè;;u ¼mÙkj izns'k ds tuin lqYrkuiqj ,oa vEcsMdj uxj ds fo'ks"k lanHkZ esa½ lq/kk nwcs 'kks/kkFkhZ] x`gfoKku thokth fo'ofo|ky;] Xokfy;j ¼e-iz-½ MkW- ¼Jherh½ vi.kkZ 'kekZ izk/;kid] x`g foKku foHkkx fot;kjkts 'kkldh; dU;k LukrdksÙkj egkfo|ky;] eqjkj] Xokfy;j ¼e-iz½ 'kks/k lkj fodklkRed euksfodkj o x`gfoKku ds vUrxZr ckY;koLFkk esa ckydksa dh iw.kZ:is.k

शोध सार

विकासात्मक मनोविकार व गृहविज्ञान के अन्तर्गत बाल्यावस्था में बालकों की पूर्णरूपेण प्रौढ़ता को प्राप्त करने के पूर्व अनेक प्रकार की अभिरुचियाँ होती हैं। बाल्यावस्था जिन्हें क्रमशः पूर्व एवं उत्तर बाल्यावस्था के नाम से जाना जाता है। इस अवस्था में बालकों में समूह प्रवृत्ति, बहुमुखी प्रवृत्ति, अनुकरण, खेल, सहानुभूत निर्देश ग्रायता, सहयोग, सामाजिक चेतना, नेतृत्व, प्रतियोगिता, द्वन्द अवज्ञा, आक्रामक सामाजिक समायोजन, मानसिक विकास आत्मनिर्भरता आदि में उसकी अभिरूचि विकसित होती है। अध्ययनों में पाया गया है कि यदि कोई बालक या बालिका बाल्यावस्था में किन्ही रूचियों को सीखने से वंचित रह गया हो तो उसके लिए पूरा जीवन भर उसे कष्ट उठाना पड़ता है। वास्तव में बाल्यावस्था में बच्चों के पास अवसर एवं समय की अधिकता होने के कारण इस अवस्था में नई रूचियों को विकसित करना एवं उसको सीखना आसान होता है। रूचि की एक विशेषता यह भी है कि यह केवल सुख की ही अनुभूति कराती है, क्योंकि जिन कार्यों में बालकों की अभिरूचि नहीं है उस कार्य को न ही बालक करते हैं और न ही समझना चाहते हैं। बाल्यावस्था में बालिकाओं की अभिरूचियाँ रचनात्मक कार्यों में होती है, जैसेः गुड़िया के कपड़े बनाना, गुड़िया का कल्पित घर बसाना, खाना बनाना, संगीत गाना, नाचना आदि। बाल्यावस्था के बालकों में विज्ञात को ज्ञात करने के लिए उनसे बातचीत करके उनसे प्रश्न पूछकर तथा उनके उपयोग की वस्तुओं का अवलोकन करके बालकों की अभिरूचियों का पता लगाया जा सकता है। बाल्यावस्था का बालक माता–पिता के रीति–रिवाजों

अन्ध–विश्वासों, रूढ़ियों व आडम्बरों में विश्वास नहीं रखता है। अस्तु उपर्युक्त अवधारणाओं को सन्दर्भित करते हुए प्रस्तुत शोधकार्य के अन्तर्गत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बाल्यावस्था के बालक–बालिकाओं पर अभिरुचि के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन (उत्तर प्रदेश के जनपद सुल्तानपुर एवं अम्बेडकर नगर के विशेष संदर्भ में) किया गया है।

मुख्य शब्द

ग्रामीण एवं शहरी, बाल्यावस्था, बालक–बालिकायें, अभिरुचि.

अभिरुचि का सरल अर्थ है किसी तथा वस्तु या क्रिया के प्रति हमारा ध्यान केन्द्रित करना। गिलफोर्ड (1964) के अनुसार–''रुचि वह प्रवृत्ति है जिससे हम किसी व्यक्ति वस्तु या प्रतिक्रिया की तरफ ध्यान देते हैं, उससे आकर्षित होते हैं या उससे सन्तुष्टि प्राप्त करते हैं।'' जबकि विंधम का मानना है कि ''अभिरुचि किसी अनुभव में संविलीन होने एवं इसमें रहने की प्रवृत्ति है।'' डी. एन. श्रीवास्तव (2005) के अनुसार– ''रुचि व्यवहार की वह प्रवृत्ति है जिसके द्वारा हम किसी वस्तु प्रतिक्रिया एवं घटना की ओर आकर्षित होते हैं एवं ध्यान देते हैं या उसे पसन्द करते हैं। हम अपने अभिरूचि से सम्बन्धित व्यवहार करके स्वयं सुख एवं सन्तुष्टि का अनुभव प्राप्त करते हैं।''

उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण के फलस्वरूप हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि रूचियां व्यवहार का प्रमुख अंग हैं। हम जिस व्यक्ति, वस्तु, प्रतिक्रिया तथ्य या घटना से आकर्षित होते हैं तो बालक उसे हर सम्भव प्रयास करके प्राप्त करना चाहता है और उससे बालक को अपार सन्तुष्टि मिलती है। इसका सम्बन्ध बालक की अभिक्षमताओं एवं योग्यताओं से नहीं है। अभिरूचि का स्वरूप आयु वृद्धि के फलस्वरूप परिवर्तित होता रहता है। आइजनेक (1972) एवं उनके साथियों के अनुसार – ''अभिरुचि व्यवहार की वह प्रवृत्ति है जो कुछ वस्तुओं व अनुभवों के प्रति कार्य कर सकने में समर्थ होती है। यह प्रवृत्ति तीव्रता और सामान्यीकरण से व्यक्ति से व्यक्ति में परिवर्तित होती रहती है।'' अभिरूचि के स्थायित्व एवं परिवर्तनशील होने के बारे में मनोवैज्ञानिकों में मतभेद है, क्योंकि कुछ अभिरूचि की प्रवृत्ति स्थाई तथा कुछ की अस्थाई होती है। बच्चों में अभिरूचि का विकास पर्यावरण की अन्तः क्रिया के परिणाम स्वरूप विकसित एवं परिवर्तित होती है। अतः पर्यावरणीय प्रभाव के फलस्वरूप बच्चों की अभिरूचियों में परिर्वतन घटित होता है, जो आयु की तीव्रता के साथ निरन्तर जारी रहता है। स्ट्राग (1943) ने अपने अध्ययन के आधार पर स्पष्ट किया है कि सामाजिक आर्थिक स्थिति व स्तर अभिरूचि को प्रभावित करती है जिससे अभियोग्यता, अभिक्षमता, पुरस्कार, संज्ञान, अभिप्रेरणा, संतुष्टि व असन्तुष्टि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जो बालक के शैक्षिक विकास को प्रभावित करती है। अभिरूचि हमारे जीवन की प्रमुख अभिक्रिया है जिसका सम्बन्ध बालक की पसन्द एवं वरीयता से होता है। जिन कार्यों को बालक पसन्द करता है, स्वाभाविक रूप से उसमें उसकी रूचि अधिक होती है। बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि के अर्जन में ज्ञानार्जन का तरीका व प्रक्रिया भी अभिरूचि के स्वरूप के आधार पर ही निर्धारित होती हैं।

व्यापक अर्थ में बाल्यावस्था जन्म से लेकर परिपक्वता तक मानी जाती है, जबकि सीमित अर्थ में 2 वर्ष से 12 वर्ष की अवस्था को बाल्यावस्था कहते हैं। इस अवस्था की दो उप अवस्थाएं होती हैं– पूर्व बाल्यावस्था (2 से 5 वर्ष) उत्तर बाल्यावस्था (6 से 12) वर्ष। इस अवस्था में बालक एवं बालिकाओं की अभिरूचियों का विकास अलग–अलग ढंग से होता हैं, जैसे–बालकों की अभिरुचि, उछलना–कूदना, बौद्धिक क्रियाकलाप, साइकिल चलाना, गेंद खेलना, जिज्ञासु प्रवृत्ति होना, तैरना, चढ़ना आदि। जबकि लड़कियों की अभिरूचियों में रचनात्मक क्रियाओं का विकास होता है जैसेः संगीत, गाना सुनना, नाचना, गुड़िया का घर सृजन करना, रसोई तैयार करना आदि।

बाल्यावस्था में उपर्युक्त विकासात्मक कार्य होते हैं जिनके द्वारा बालक का आगामी विकास पूर्णतः निहित होता है और बालक के विकास के अनुसार ही उसका भावी विकास जाना जा सकता है।

बालकों की अभिरुचियों को समझाने की विधियां

बालकों की अभिरूचियों को ज्ञात करने हेतु निम्नलिखित विधियां अपनाई जाती हैं:

1. बालकों के क्रिया–कलापों का निरीक्षण जैसे बालक के खेल, बालक के खिलौने का प्रकार, वस्तुओं एवं खिलौने का संग्रह जिससे बालक के दैनिक क्रियाकलापों के द्वारा बालक की अभिरूचि का पता लगया जा सकता है।
2. बालकों की जिज्ञासा वृद्धि तथा उसके द्वारा पूछे गए प्रश्नों के द्वारा।
3. शैक्षिक व्यवसायिक और सामाजिक रूचियों के अध्ययन हेतु विभिन्न प्रकार के मानकीकृत परीक्षण का उपयोग किया जाता है।
4. बालकों से बातचीत करके उनकी अभिरूचि की जानकारी की जा सकती है।
5. बालकों के स्वभाव एवं उनकी मित्र–मण्डली से भी बालकों की अभिरूचियों का पता लगाया जा सकता है।

बालकों की रुचियाँ

1. शारीरिक रूचियाँ
2. खान–पान सम्बन्धी रूचि
3. शिक्षा में रूचि
4. खिलौनों में रूचियाँ
5. वस्त्र एवं फैशन में रूचियाँ
6. संगी–साथी में रूचियाँ
7. बड़े होकर कुछ बनने रूचियाँ
8. नाम कमाने में रूचि
9. धर्म में रूचि
10. सेक्स में रूचि

संबंधित शोध साहित्य

शोध से सम्बन्धित अनेक अध्ययन कार्य अनेक विद्वानों, वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिकों के द्वारा पूर्व में किए जा चुके हैं यथा:

आइसनेक (1872) और उनके साथियों ने अपने अध्ययन में पाया कि रूचि व्यवहार की वह प्रवृत्ति है जो कुछ क्रियाओं, वस्तुओं या अनुभवों के प्रति कार्य कर सकने में समर्थ होती हैं। तीव्रता और सामान्वीक्षण में यह प्रवृत्ति व्यक्ति से व्यक्ति में परिवर्तित होती रहती है।

डी. एन. श्रीवास्तव (2005) ने अध्ययन में पाया गया कि अभिरूचि व्यवहार की वह प्रवृत्ति है जिसके द्वारा हम किसी घटना, वस्तु क्रिया आदि की तरफ अपने ध्यान को आकर्षित एवं केन्द्रित करते है या पसन्द करते हैं। हम रूचि से सम्बन्धित व्यवहार करके सुख और सन्तुष्टि का अनुभव करते हैं।

मेज, सिल्वा इरीन डॉरस आदि (2007–2008) द्वारा एक अध्ययन बाल्यावस्था के महाविद्यालीयन छात्रों में अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक सफलता शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में 200 प्रतिदर्शित छात्रों के दो समूहों (बालक/बालिकाओं) पर किया गया प्राप्त परिणाम के आधर पर स्पष्ट हुआ कि बालक एवं बालिकाओं की अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। जिससे निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि, शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में बालिकाएं–बालकों से उच्च स्तर पर होती हैं, जबकि अन्य अभिप्रेरणात्मक प्रवृत्तियाँ निम्न होती हैं।

रंजन कुमार एवं रामध्यान राय (2010) द्वारा बाल्यावस्था के हरिजन छात्रों आत्म समप्रत्यय एवं संस्थिति नियंत्रण का अध्ययन उनके अधिवास एवं शैक्षिक स्तर के सन्दर्भ में किया गया। परिणाम में देखा गया कि ग्रामीण

छात्रों की अपेक्षा नगरीय छात्रों का शैक्षिक स्तर उच्च पाया गया।

अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्दिष्ट किए गए है:

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित बाल्यावस्था के बालकों पर अभिरूचि के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित बाल्यावस्था की बालिकाओं पर अभिरूचि के प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन कार्य के अन्तर्गत वस्तुनिष्ठ परिणाम प्राप्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाएं अध्ययनार्थ निर्मित की गयी हैं:

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित बाल्यावस्था के बालकों पर अभिरूचि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित बाल्यावस्था की बालिकाओं पर अभिरूचि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

अध्ययन विधि एवं प्रतिदर्श

प्रस्तावित अनुसंधान कार्य के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश के जनपद सुल्तानपुर एवं अम्बेडकरनगर के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र से सम्बन्धित माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा छः सात एवं आठ में अध्ययनरत् 09 से 12 वर्ष की आयु के बालक एवं बालिकाओं (ग्रामीण क्षेत्र से 200 एवं नगरीय क्षेत्र से 200) को प्रतिदर्श हेतु यादृच्छिक रूप में चयनित किया गया है। जिसमें ग्राम क्षेत्र से चयनित 200 में से 100 बालक, 100 बालिका का चयन किया है।

अनुसंधान उपकरण परीक्षण

अभिरूचि परीक्षण–प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत छात्रों की अभिरुची मापन हेतु डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ठ, प्रवक्ता शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षक शिक्षा विभाग, डी. ए. वी. कॉलेज देहरादून गढ़वाला विश्वविद्यालय (उत्तराखण्ड) के द्वारा किया गया है। परीक्षण का निर्माण निम्नलिखित उद्देश्यों को लेकर किया गया यथा– छात्रों में रूचि विकास का अध्ययन योग्यता का विकास, अभिक्षमता का विकास, व्यक्तित्व गुणों एवं वर्तमान परिस्थिति में छात्रों का योगदान वैयक्तिक एवं आत्मीय प्रसन्नता की प्रवृत्ति तथा सामाजिक दृढ़ता का अध्ययन। इस परीक्षण निर्माण मनोवैज्ञानिक सुपर–1957, अनास्टेसी–1976 एवं मेयर–1931 आदि के विचारों व सिद्धान्तों के साक्षेप किया गया हैं। भारतीय सन्दर्भ में एस. पी. कुलश्रेष्ठ के द्वारा निर्मित अभिरूची मापनी अत्याधिक उपयोगी होती है। इस रूचि मापनी का भारतीय सन्दर्भ में सर्वप्रथम प्रयोग इलाहाबाद ब्यूरो– 1956 के द्वारा किया गया।

तालिका संख्या 1: मापनी की विश्लेषण तालिका

विश्लेषण	**प्राप्तांक**
उच्च रूचि	18–20
औसत से ऊपर रूचि	14–17
औसत रूचि	07–13
औसत से नीचे रूचि	04–06
निम्न रूचि	00–03

तालिका संख्या 2: रूचि क्षेत्र की निर्धारण आख्या

सं.क्र.	**सामान्य आख्या**	**विशिष्ट आख्या**
1	मुख्य रूचि क्षेत्र	उच्च रूचि क्षेत्र
2	द्वितीय रूचि क्षेत्र	औसत से अधिक रूचि
3.	तृतीय रूचि क्षेत्र	औसत रूचि
4.	सबसे कम रूचि क्षेत्र	निम्न रूचि

सांख्यकीय गणना विधि

प्रस्तावित अनुसंधन कार्य के अन्तर्गत प्राप्त प्रदत्तों का सांख्यकीय गणना व विश्लेषण करने के लिए मुख्य रूप से मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट एवं सार्थकता परीक्षण सांख्यकीय विधियों का आवश्यकतानुसार अनुप्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण

परिकल्पना1: ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित बाल्यावस्था के बालकों पर अभिरूचि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका संख्या 3: ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित बाल्यावस्था के बालकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

समूह	मध्यमान (M)	प्रामाणिक विचलन (SD)	स्वतंत्रता अंश (df)	प्रामाणिकता स्तर		टी–मान
ग्रामीण बालक (100)	70.74	10.03	198	0.01	2.60	3.03
शहरी बालक (100)	66.52	9.63		0.05	1.97	

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

198 df पर t का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.60 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 1.97 होता है। गणना से प्राप्त t का मान 3.03 इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित बाल्यावस्था के बालकों पर अभिरूचि का सार्थक प्रभाव पड़ता है। परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है।

परिकल्पना 2: ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित बाल्यावस्था की बालिकाओं पर अभिरूचि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका संख्या 3: ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित बाल्यावस्था की बालिकाओं का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

समूह	मध्यमान (M)	प्रामाणिक विचलन (SD)	स्वतंत्रता अंश (df)	प्रामाणिकता स्तर		टी–मान
ग्रामीण बालिकायें (100)	68.55	10.9	198	0.01	2.60	4.34
शहरी बालिकायें (100)	62.32	9.32		0.05	1.97	

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

198 df पर t का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.60 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 1.97 होता है। गणना से प्राप्त t का मान 4.34 इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित बाल्यावस्था की बालिकाओं पर अभिरूचि का सार्थक प्रभाव पड़ता है। परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है।

निष्कर्ष

अभिरूचि मापनी पर प्राप्त प्राप्तांकों से सार्थकता परीक्षण (टी टेस्ट) ज्ञात करने पर प्राप्त मान से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं पर अभिरूचि का सार्थक प्रभाव पड़ता है। ग्रामों व शहरों का परस्पर वातावरण भिन्न प्रकार का होता है और बालक एवं बालिकाओं की रुचि उसी वातावरण के अनुसार विकसित होती है, चाहे वह खेल में हो, मनोरंजन में हो, अध्ययन में हो या अन्य किसी कार्य के लिए। दोनों ही परिवेश में परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं रहन–सहन, परिवेश आदि से बालक–बालिकाओं में रुचि का विकास होता है जो कि वातावरण अनुसार भिन्न प्रकार का होता है, इसलिए ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से

सम्बन्धित बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं पर अभिरूचि का सार्थक प्रभाव पड़ता है। बालक एवं बालिकायें चाहें किसी भी परिवेश के हों पर उन पर अभिरुचियों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है, जिससे उनके व्यक्तित्व का विकास होता है और वे बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर अग्रसर होते हैं।

सुझाव /आगामी शोध हेतु सुझाव

- विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु उसे प्रकृति, रूचियों, मनोवृत्तियों, क्षमताओं तथा योग्यताओं का ज्ञान होना आवश्यक है।
- प्राचार्य पढ़ने की आदतों को विकसित करने के लिये अपने पुस्तकालय में रोचक पुस्तकों की वृद्धि करने के लिये प्रयत्नशील हों।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि एवं अध्ययन आदतों पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. अस्थाना, विपिन. (2005). *मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन.* आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
2. अनुराग. (2011). *शैक्षिक एवं मानसिक मापन. पूर्णतः,* संशोधित संस्करण. मेरठः आर. लाल बुक डिपो, आगरा।
3. भटनागर, एस. (2007) *शिक्षा मनोविज्ञान.* मेरठ, आर.लाल. बुक डिपो, आगरा।
4. Mage Silva. Erin, Dorsasel. et. all (2007-08) Student. *Journal of Collge Student Success in School Research Theory and Practice*: Issue. Vol. 9 (Non) P-24-9-267.
5. Ranjan Kumar and Ram Dhyan Rai- (2010)- An Investigation of Self Concepts and Locus of Control of Scheduled Caste Students in relation to thier Residentional Area.

****